Regarding the suicide committed by a dalit youth, Rajkumar Jatav and his family in Vidisha District, Madhya Pradesh.

श्री शिवराज सिंह चौहान (विदिशा): माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं बड़े भारी मन के साथ यह मामला उठा रहा हूं। मां-बाप अपने बच्चों को जान से ज्यादा प्यार करते हैं, लेकिन यदि मां-बाप अपने बच्चों को अपने हाथों से सलफास खिलाने लगें और जहर पिलाने लगें और खुद भी आत्महत्या करने लगें, तो आप स्थिति की भयावहता का अंदाजा लगा सकते हैं। कल पूरा विदिशा बन्द था। वहां की पूरी की पूरी जनता स्तब्ध थी। विदिशा में राजकुमार जाटव नाम के एक दलित नौजवान ने, जिसने 15 साल तक सरकारी नौकरी दैनिक वेतनभोगी के रूप में की, किसी कारण से उसे काम से हटा दिया गया, नौकरी से निकाल दिया गया, आठ महीने तक वेतन नहीं मिला था। जब वह अपने बच्चों को भूख से बिलखते हुए नहीं देख पाया, तो उसने अपने बच्चों को सलफास खिला दिया और खुद भी आत्महत्या कर ली।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह तथ्य है जो उसने अपने पत्र में लिखा है और यह पूरी शासन व्यवस्था के माथे पर एक कलंक का टीका है। उसने अपने पत्र में लिखा है कि उसके योग्य होने के बावजूद उसे परमानेंट नहीं किया गया और पैसे एवं सोर्स के आधार पर उससे जूनियर लोगों को परमानेंट कर दिया गया। मध्य प्रदेश में यह अकेली ऐसी घटना नहीं है, बल्कि हजारों दैनिक वेतनभोगियों को काम से निकाल दिया गया है। मैं आपके माध्यम से केन्द्र सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि प्रदेश सरकार के रहमो-करम पर मध्यप्रदेश सरकार के दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों को न छोड़ा जाए। धीरे-धीरे हजारों दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी जिनको नौकरी से निकाला जा रहा है वे भूखों मरने की स्थिति में पहुंच गए हैं। यदि इस स्थिति पर नियंत्रण नहीं किया गया, तो ऐसी स्थिति में हजारों दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी हत्या करने पर विवश हो जाएंगे। â€¦(व्यवधान)